P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनसंख्या एवं बदलता परिदृश्य जनपद (पिथौरागढ़ के सन्दर्भ में)

चन्द्रावती भट्ट
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
एल0एस0एम0राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

सारांश

भारत के उत्तरी पर्वतीय भाग हिमालय के पर्वत श्रखलाओं की तलहटी में नवसृजित उत्तराखण्ड राज्य का सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ अर्न्तराष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित है, यह हिमाच्छादित शिखरों बुग्यालों, वनस्वतियों, हरियाली, पुष्पों, पशु पक्षियों के अलौकिक दृश्यों प्राकृतिक छटाओं, प्राचीन धरोहरों, सांस्कृतिक परम्पराओं धार्मिक तीर्थ स्थलों, शुद्ध पर्यावरण, जड़ी बूटियों एवं आयुवेदिक कृषि उत्पादों के लिए देश– विदेश में स्थान बनाये हुए है। सीमान्त जनपद पिथौरागढ़, मध्य हिमालय के सुदूरवर्ती गाँव, नैसंगिक सौन्दर्य प्राकृतिक छटायें, अगम्य गाँव सुख– सुविधाओं से वंचित दुर्गम गाँव, दूसरी ओर पलायन, शहरी करण, कृषि जैवविविधता से बदलता परिद्वश्य है, जिसके प्रमाण जनसंख्या वितरंण, नगरीय जनसंख्या, शहरों मुख्य केन्द्रों में अनियन्त्रित निर्माण, अन्न उत्पादक, क्षेत्रों का बंजर भूमि में बदलता, अधिवास प्रतिखप में परिवर्तन आदि है। इसके साथ–2 सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिदृश्य में परिवर्तन आ रहे हैं। शहरीकरण, पलायन, अनियन्त्रित निर्माण सर्वागींण विकास का उपाय नही है। सुदूरवर्ती दुर्गम ग्रामीण क्षेत्रों को आत्मनिर्भर बनाना अति आवश्यक है। यहाँ पर निवास करने वाली 85.6 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को भी प्रगति की ओर अग्रसर करना है। जिससे कृषि– जैव विविधता, जैव विविधता का संरक्षण एवं संसाधनों का सदुपयोग और सतत एंव संतुलित विकास हो सकता है, आत्मनिर्भरता के लिए जनसंख्या एवं संसाधनों का सन्तुलन होना आवश्यक है। अध्ययन का उदेश्य जनपद के जनसंख्या, बदलते परिवेश एवं परिदृश्य के कारणों को जानना है। जिससे इन पर रोक लगाकर दुष्परिणामों को रोका जा सके। क्षेत्र की खुशहाली एवं समृद्धता के लिए सड़क, चिकित्सा एवं शिक्षा तकनीकि शिक्षा, उद्योग धन्धों, स्वरोजगार एवं–कृषि जैव विविधता के संरक्षण पर विशेष ध्यान आकर्षित करना है।

मुख्य शब्द : हिमालय, जनसंख्या, कृषि, जैव विविधता, पलायन, संसाधन,पर्यावरण, रोजगार।

प्रस्तावना

भारत के उत्तरी पर्वतीय भाग मध्य हिमालय के हिमाच्छादित पर्वत श्रंखलाओं की तलहटी में नव सृजित उत्तराखण्ड राज्य का सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ अर्न्तराष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित है, इसे वर्ष 1960 को अल्मोड़ा जनपद से अलग किया गया। यह हिमाच्छादित शिखरों, बुग्यालों, वनस्पतियों, अलौकिक दृश्यों, प्राकृतिक छटाओं, प्राचीन धरोहरों, सांस्कृतिक परम्पराओं, शुद्ध पर्यावरण एवं राजनैतिक द्रष्टि से विशिष्ट स्थान लिए है। पर्यावरण में आने वाले परिदृश्य के परिर्वतनों जैसे– आपदाओं, प्रदूषण, जैव एवं कृषि जैव विविधता, पलायन आदि का जिम्मेदार स्वयं मानव है। मानव श्रष्ठि का विशिष्ठ प्राणी है। मानव की जिज्ञासा, बुद्धि एवं विवेक से आज तकनीकि ज्ञान चरम सीमा में पहुँच गया है। वर्तमान समय निरन्तर विकास से पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास हुआ है। क्षेत्र के विकास में मानव उत्कृष्ट प्राणी है, जो अपनी जिज्ञासा बुद्धि– विवेक से आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए क्रियाएं एवं प्रति क्रियाऐं करता रहता है। जिससे पर्यावरणीय गुणवत्ता प्रभावित होती है।

अध्ययन क्षेत्र

पिथौरागढ़ जनपद का कुल भौगौलिक क्षेत्रफल 7298 वर्ग कि0 मी0 है कुल जनसंख्या (वर्ष– 2011 की जनगणना के अनुसार) 483439 है। राज्य की कुल जनसंख्या का 5.45 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या की 85.6 प्रतिशत ग्रामीण 14.4 प्रतिशत नगरीय है। जनपद का विस्तार 29^0–27′, व 30^0–39′ उत्तरी अक्षांश तक 79^0 50′ से 81^0–1′ पूर्वी देशान्तर तक फैला है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य बढ़ती आबादी के पश्चात पर्यावरण में किस तरह के परिवर्तन आये हैं। पलायन एवं शहरीकरण को रोक कर शहर गाँव की ओर उद्देश्य रखकर ग्रामीण क्षेत्रों का विकास कर श्वेत, हरित, नील क्रान्ति लाकर नैसैर्गि्क शौन्दर्य के साथ–साथ, एक शुन्दर, स्वच्छ, समृद्ध पिथौरागढ़ बनाना है।

अध्ययन की विधि

1. सांखिकीय पत्रिका, साहित्यों एवं अभिलेखों से आकड़ों का संकलन।
2. आकड़ों का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक ढ़ंग से अध्ययन।
3. साक्षात्कार के आधार पर लोगो की अभिरूचि, एवं प्राचीन व वर्तमान के परिदृश्यों को अवलोकित किया।

परिणाम एवं व्याख्या

सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ की विषय भौगोलिक परिस्थिति दुर्गम एवं अगम्य गाँव एवं इन गाँवों में निवास करने वाले साहसी, कठिन परिश्रमी,मानव प्राकृतिक दैविक आपदाओं से प्रभावित व्यक्ति व परिवार सुखमय एवं संघर्ष विहीन जीवन की कल्पना करते हैं। इस कल्पना को परोक्ष रूप में लाने की भावनाओं एवं प्रयास से ग्रामीण व नगरीय आबादी में परिवर्तन होते रहे हैं। निम्न तालिका में विगत 50 वर्षो से ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या विवरण दिया गया है–

वर्ष	ग्रामीण	नगरीय	कुल
1961	3,44,143	–	3,44,143
1971	4,03,221	11,942	4,15,163
1981	3,42,415	22,787	3,65202
1991	3,80,950	35,697	4,16,647
2001	4,02,456	59,833	4,62,289
2011	4,13,834	69,605	4,83,439

स्त्रोत : सांखिकीय पत्रिका–2013 जनपद पिथौरागढ़
सैन्सस हैण्ड वुक– 1971

उपरोक्त तालिका में वर्ष 1961 से 2011 तक क्रमश जनसंख्या में वृद्धि हुई है। ग्रामीण जनसंख्या के साथ–साथ नगरीय जनसंख्या में तीव्र गति से परिवर्तन आया है।

जनपद में वर्ष 1961–2011 तक प्रति दशक प्रतिशत में वृद्धि निम्न प्रकार है

वर्ष	कुल	ग्रामीण	नगरीय
1961	–	–	–
1971	20.64	17.17	–
1981	12.03	15.08	90.81
1991	14.09	11.25	56.66
2001	10.95	5.65	67.61
2011	4.58	2.83	16.33

स्रोतःसांखिकीय पत्रिका जनपद पिथौरागढ़– वर्ष 2013

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विगत 50 वर्षो में जनसंख्या के विकास से स्वरूप में परिवर्तन आया है। वर्ष 1971 में कुल में 20.64 का ग्रामीण में 17.17 परिवर्तन हुआ है 2001 एवं 2011 के दशक में कुल 4.58 प्रतिशत ग्रामीण आबादी में 2.83 प्रतिशत है। नगरीय आबादी मे 1971 एवं 1981 के दश्क में 90.81जबकि वर्ष 2001 से 2011 में ग्रामीण में 2.83 प्रतिशत एवं नगरीय में 16.33 प्रतिशत का अन्तर हुआ है। आकड़ों एवं भू–द्वश्य को देखने से स्पष्ट होता है, कि वर्ष 1960 में जनपद बनने के पश्चात छोटे–छोटे बाजार केन्द्र, कस्बे, नगर केन्द्रों की और जनसंख्या बढती गयी। जिससे गाँवों से क्रमशः प्रवास प्रारम्भ हुआ, फलस्वरूप गाँव खाली होते गये। नगरों में जनसंख्या का समूहीकरण हुआ, जिसका उदाहरण पिथौरागढ़ डीडीहाट, धारचूला, मुनस्यारी, नगरीय केन्द्र है। पिथौरागढ़ नगर इसका प्रमाण है।

पिथौरागढ जनपद में वर्ष 1981 से 2011 तक साक्षरता का प्रतिशत निम्न प्रकार है

वर्ष	पुरूष	महिला	कुल
1981	78.33	27.04	52.35
1991	80.31	42.41	61.38
2001	90.06	62.59	75.95
2011	92.75	72.29	82.25

स्त्रोतःसांख्यिकीय प्रत्रिका जनपद पिथौरागढ़– वर्ष–2013

जनपद में साक्षरता में बहुत अधिक महत्वर्पूण परिवर्तन आये हैं जिसमें साक्षरता एवं तकनीकि शिक्षा की दौड़ है। आधुनिक समय में शिक्षा के साथ तकनीकि शिक्षा की ओर नई पीढ़ी अग्रसर है। साक्षरता में वर्ष– 1961 से वर्ष 2011 तक बहुत अधिक अन्तर है। विगत 30 वर्षों में पुरूषों का साक्षरता प्रतिशत 78.33 से 92.75 एवं महिलाओं का 27.04 से 72.29 हो गया है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा एवं तकनीकि शिक्षा एवं महिला शिक्षा पर विशेष बल दिया गया, जिसके परिणाम सराहनीय हैं।

कृषि देश का आर्थिक आधार है, कृषि आर्थिक आधार एवं मुख्य व्यवसाय होने के बाद भी कृषि एवं भूमि उपयोग के क्षेत्रों में बदलाव आया है, यहां के लोगों का प्रवास शहरों की ओर अधिक हो रहा है। वर्तमान में जनपद में 59.94 कृषक हैं। पहाड़ों पर पैदा होने वाली महत्वपूर्ण फसलों का उत्पादन भी कम होता जा रहा है। हरे–भरे अन्न उत्पादक खेत बंजर भूमि में बदल रहे हैं, यह परिवेश प्रत्येक गाँव में दिखाई पड़ रहा है। यह भविष्य में पर्यावरण, कृषि–जैव विविधता, जैव विविधता एवं संस्कृति को प्रभवित कर सकता है जिसके दुष्परिणाम एक जटिल समस्या बन सकती है। पलायन, शहरीकरण, जीवन स्तर में परिवर्तन, कृषि का बदलता स्वरूप पर्यावरण, पशुपालन, उद्योग धन्धे, संसाधन दोहन, बदलती मानसिकता यहा के परिवेश को बदल रहे है। जैव विविधता, कृषि–जैव विविधता का ह्रास, आत्मनिर्भरता में कमी, संसाधनो का विदोहन (वन,खनिज, जड़ी–बूटी) जलवायु परिवर्तन, फसलों–फलों में परिवर्तन ग्लेशियरों का पिघलना एवं पीछे हटना , भू–स्खलन बाढ़, अनियामित निमांण, प्राचीन जल स्रोतो का विलुप्त होना, कृषि योग्य भूमि अधिवास में परिवर्तित, शहरों में जनाधिक्यएवं समूहीकरण, गाँवों का निरन्तर खाली होना, फसल प्रतिरूप मे परिवर्तन, से बदलता परिदृश्य परिलाक्षित हो रहा है। श्वेत एवं हरित क्रान्ति भी प्रभावित हो रही है। वर्तमान में यहाँ की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि कार्य करती है 0.50 कृषि श्रमिक 3.56 पारिवारिक उद्योग, 36.01

अन्य कार्यों में लगी है। जबकि वर्ष 1961 से 87.3 कृषक वर्ष 1971 में 83.3 थे, धीरे–धीरे गाँवों से पलायन एवं शहरीकरण से गाँव खाली होते जा रहे हैं और कृषकों का प्रतिशत क्रमशः कम होता जा रहा है। इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था एवं रोजगार पर पड़ रहा है।

समस्या

पिथौरागढ़ जनपद में जनसंख्या एव बदलता परिदृश्य विकास के साथ–साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समस्याओं को जन्म दे रहा है। अनियमिततायें बढ़ रही है, ग्रामीण आबादी भविष्य की सोच न रखते हुए मैदानों व शहरों को दौड़ लगा रही है। जैसे– खाली होते समृद्ध खुबसूरत गाँव, गाँव से शहर की ओर स्नानान्तरण, पलायन की सक्रियता, ग्रामीण संस्कृति का ह्रास, कृषि का बदलता स्वरूप, बंजर होती कृषि भूमि अन्न उत्पादक एवं फल उत्पादक क्षेत्रों का अधिवास में परिवर्तन, शहरों में अनियत्रित निर्माण विलुप्त होते नौले, तालाब, पोखर धारे, एवं प्राकृतिक जल स्त्रोत, पर्यावरण का दूषित होना, पशुधन में कमी, कृषि जैव विविधता एवं जैव विविधता एक प्रमुख समस्या है। यह समस्या किसी व्यक्ति विशेष की नहीं बल्कि देश व राज्य की बन कर आ रही है। इन समस्याओं का समाधान जनपद की सुरक्षा आत्मर्निभरता समृद्धता के लिए अति आवश्यक है।

सुझाव

1. विकास के साथ–साथ हिमालय दर्शन, जैसी योजनाओं के माध्यम एवं पर्यटन विकास से यहाँ के खुबसूरत गाँव आबाद एवं पलायन से खाली होने से बचाये जाये।
2. ग्रामीण विकास योजनाओं को प्रभावी बनाने का प्रयास आवश्यक हैं।
3. सुदूरवर्ती गाँवों को सड़क, संचार, शिक्षा, तकनीकि शिक्षा चिकित्सा से जोड़ा जाय जिससे क्षेत्रों में निवास करने वाली आवादी को सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाय।
4. प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए सम्बन्धित योजनायें लागू किया जाए।
5. गाँवों में 'स्वेत क्रान्ति' लाने का प्रयास किया जाये और पशुपालन एवं दुग्ध उद्योग को बढ़ावा दिया जाये।
6. हस्त शिल्प कला एवं कुटीर उद्योगों का संरक्षण कर कृषकों एवं उद्योगियों को प्रोत्साहन दिया जाय।
7. गाँवों के अधिकार क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग स्थानीय गाँव वासियों को दिया जाए जिससे संसाधनों का दोहन माफियों से रोका जा सके। जैसे– जल, खनिज, वन, जड़ी बूटियाँ आदि।
8. जल संसाधन को देखते हुए लघु जलविद्युत योजनायें, मत्स्य पालन, घराट(घट्ट) आदि का संरक्षण एवं जीर्णोद्वार किया जाए जिससे पुनः उपयोग में लाये जा सके।
9. कृषि योग्य भूमि से अनियन्त्रित निर्माण में रोक लगाकर कृषि के अतिरिक्त भूमि पर ही विकास कार्य किये जाये।
10. भौगोलिक परिस्थिति एवं कृषि– जैवविविधता को देखते हुए प्राचीन फसलों का उत्पादन जो आर्युवेद की दृष्टि से स्वास्थपद एवं लाभ–दायक फसलों, फलों, शब्जियों, प्राकृतिक कन्द मूल फल को भी बड़ावा दिया जाय। फसलों की प्राचीन किस्में, जैसे धान की किस्में (धरातल के स्वरूप, के अनुसार उगाई जाती है) धान के साथ कौनी(कौन) सफेद, भूरा, छोटा– बड़ा काला भद्दा गेहूँ के साथ वुआ को संरक्षित करना आवश्यक है।
11. समय– समय पर जागरूपता अभियान से शिक्षा, सामाजिक गतिविधियों एवं योजनाओं से अवगत किया जाये।
12. सरकार द्वारा नितियाँ व योजनाओं को भौगौलिक परिस्थिति के आधार पर सुनिशिचित कर कार्यान्वित किया जाय, गाँवों में स्वरोजगाार से आत्मनिर्भर बनने वाली योजनायें कार्यानवित किये जायें।

निष्कर्ष

पिथौरागढ़ जनपद के जनसंख्या स्वरूप एवं बदलते परिद्वश्य से यह स्पष्ट होता है कि बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावर्णीय परिवेश में परिवर्तन देखने को मिला है। जैसे सांस्कृतिक परिदृश्य में सड़कें, शहरीकरण, सरकारी संस्थायें शिक्षा एवं तकनीकि– शिक्षा, अनियन्त्रित निर्माण, खेत खलियानों का आवासीय क्षेत्रों में परिवर्तन, पलायन, कृषि भूमि का बंजर भूमि में बदलना, कृषि जैव विविधता, जैव–विविधता, आपदायें जलवायु परिवर्तन से यहाँ का परिदृश्य बदल चुका है। पलायन करती जनसंख्या खाली होते गाँव, प्राचीन धरोहरें, कृषि जैव विविधता, जैव विविधता भविष्य के लिए चुनौती बन सकती है, इसके समाधान के लिए गाँवों को आत्मनिर्भर बनाकर पलायन एवं शहरीकरण पर अंकुश लगाना अति आवश्यक है, यहाँ की 85.6 गाँवों में निवास करती है। गाँव प्राकृतिक सम्पदा, शुद्ध पर्यावरण, प्राचीन शिल्प एवं धरोहर संजोये हुए हैं। ये समृद्धशली गाँव आज धीरे–धीरे विरान होते जा रहे हैं। पलायन और शहरीकरण की प्रबलता एवं सक्रियता को देखते हुए "शहर गाँव की ओर मानसिकता में बदलना आवश्यक है, जिससे यह क्षेत्र आत्मनिर्भर, समृद्ध बनकर विभिन क्षेत्रों में अपनी पहचान बनायेगा, सतत विकास को देखते हुए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर पलायन करती आबादी पर रोक लगाकर खेत खलियानों बाग बगीचों को शुशोभित, कर इस क्षेत्र को समृद्ध शाली एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अलका गौतम–'कृषि भूगोल'–(2011) शारदा पुस्तक भवन, पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड़ इलाहाबाद। 211002*
2. *डा0डी0सी0पंत0, भारत में ग्रामीण विकास– कॉलेज बुक डिपो जयपुर नई दिल्ली, मुम्बई।*
3. *डा0 हीरालाल– 'जनसंख्या भूगोल'7 (1999) वसुन्धरा प्रकाशन दाउदपुर– गोरखपुर।*
4. *मैथानी, डी0डी0 गायली प्रसाद, राजेश नौटियाल 'उत्तराखण्ड का भूगोल'– 2010 शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद*

5. *डा0 आर0 एन0 सिंह, डा0 एस डी मौर्य 'नगरीय भूगोल'– शारदा पुस्तक भवन पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स युनिवर्सिटी रोड़ इलाहाबाद–211002*
6. *त्रिपाठी– आर0डी0– "जनाकिकी और जनसंख्या अध्ययन"– (1999) वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।*
7. *त्रिपाठी– रामदेव, "जनसंख्या भूगोल"– (2008) वसुन्धरा प्रकाशन दाउदपुर –गोरखपुर*
8. *सेंन्सस हेंण्ड बुक वर्ष– 1961, जनपद अल्मोड़ा,*
9. *सांखिकीय पत्रिका वर्ष 1976 जनपद पिथौरागढ़, सांखिकीय पत्रिका वर्ष 2013 जनपद पिथौरागढ़।*